REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 7 | APRIL - 2026

''अल्का सरावगी की कहानियों का सामाजिक–आर्थिक अध्ययन''

डॉ. सीमा तिवारी
पी. आर. आर. एस. महाविद्यालय, पहाडिया रीवा
जिला रीवा मध्यप्रदेश – भारत

1. प्रस्तावना :–

अल्का सरावगी समकालीन हिंदी कथा–साहित्य की महत्वपूर्ण लेखिका हैं। उन्होंने भारतीय समाज में आर्थिक उदारीकरण के बाद उत्पन्न परिवर्तनों को मानवीय संवेदनाओं के साथ चित्रित किया। उनकी कहानियाँ केवल व्यक्तिगत जीवन की कथा नहीं, बल्कि समाज और अर्थव्यवस्था के अंतर्संबंधों का दस्तावेज भी हैं।

अल्का सरावगी की कहानियाँ भारतीय समाज के बदलते सामाजिक–आर्थिक ढाँचे को बहुत गहराई से प्रस्तुत करती हैं। उनका कथा–साहित्य विशेष रूप से शहरी मध्यवर्ग, मारवाड़ी समाज, वैश्वीकरण, बाजारवाद, स्त्री–अस्मिता और आर्थिक असमानताओं पर केंद्रित है। नीचे उनके कहानी–साहित्य का सामाजिक–आर्थिक अध्ययन व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत है।

अल्का सरावगी की कहानियाँ समकालीन हिंदी साहित्य में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन, शहरी मध्यवर्ग, व्यापारिक समुदाय, स्त्री–अस्मिता और वैश्वीकरण के प्रभावों को गहराई से प्रस्तुत करती हैं। उनका कथा–साहित्य विशेष रूप से मारवाड़ी समाज, पूँजीवादी मानसिकता और बदलते पारिवारिक मूल्यों का सूक्ष्म अध्ययन माना जाता है। नीचे उनके कथा–साहित्य का सामाजिक–आर्थिक अध्ययन प्रस्तुत है।

अल्का सरावगी का साहित्यिक परिचय :–

अल्का सरावगी का जन्म 1960 में कोलकाता में हुआ। वे हिन्दी की प्रसिद्ध कथाकार एवं उपन्यासकार हैं। उनका प्रमुख उपन्यास कलि–कथा रू वाया बाइपास साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित है। उनके कहानी–संग्रहों में कहानियों की तलाश में तथा दूसरी कहानी विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

2. सामाजिक परिप्रेक्ष्य :–

(क) मध्यवर्गीय समाज का चित्रण

सरावगी की कहानियों में शहरी मध्यवर्ग की मानसिकता, असुरक्षा और सामाजिक संघर्ष प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं।

विशेषताएँ :–

1. प्रतिष्ठा बनाए रखने की चिंता
2. आर्थिक अस्थिरता
3. आधुनिकता और परंपरा का संघर्ष
4. उपभोक्तावाद का प्रभाव

उनके पात्र अक्सर सामाजिक पहचान और आर्थिक सफलता के बीच फँसे दिखाई देते हैं।

(ख) मारवाड़ी समाज की संरचना

लेखिका स्वयं मारवाड़ी पृष्ठभूमि से जुड़ी हैं, इसलिए उनकी कहानियों में मारवाड़ी समाज की व्यावसायिक मानसिकता, पारिवारिक अनुशासन और सामाजिक रूढ़ियाँ स्वाभाविक रूप से आती हैं।

प्रमुख बिंदु :–

1. व्यापार केंद्रित जीवन
2. परिवार की सामूहिकता
3. स्त्रियों पर सामाजिक नियंत्रण
4. धन और प्रतिष्ठा का संबंध

वे दिखाती हैं कि आर्थिक समृद्धि होने के बावजूद भावनात्मक शून्यता बनी रहती है।

(ग) स्त्री विमर्श :–

अल्का सरावगी की कहानियों में स्त्री केवल घरेलू पात्र नहीं, बल्कि सामाजिक–आर्थिक दबावों से जूझती हुई चेतन व्यक्तित्व है।

1. स्त्री की समस्याएँ
2. आर्थिक निर्भरता
3. पारिवारिक दमन
4. पहचान का संकट
5. कार्यक्षेत्र में असमानता

उनकी स्त्रियाँ परंपरा और आधुनिक स्वतंत्रता के बीच संतुलन खोजती हैं।

3. आर्थिक परिप्रेक्ष्य :–

(क) उदारीकरण और बाजारवाद :–

1990 के बाद भारतीय अर्थव्यवस्था में आए बदलावों का प्रभाव उनकी कहानियों में स्पष्ट दिखाई देता है।

प्रभाव :–

1. उपभोक्तावादी संस्कृति का विस्तार
2. नैतिक मूल्यों का ह्रास
3. संबंधों का व्यावसायीकरण
4. धन को सफलता का मानक मानना

उनकी कहानियाँ यह संकेत देती हैं कि बाजार ने मनुष्य को वस्तु में बदल दिया है।

(ख) वर्ग विभाजन :–

लेखिका आर्थिक विषमता को संवेदनात्मक रूप में प्रस्तुत करती हैं।

1. वर्गीय अंतर
2. उच्च वर्ग की भौतिक सम्पन्नता
3. निम्न वर्ग का संघर्ष
4. मध्यवर्ग की असुरक्षा

वे दिखाती हैं कि आर्थिक विकास का लाभ समाज के सभी वर्गों तक समान रूप से नहीं पहुँचता।

(ग) बेरोजगारी और अस्थिरता :–

कई कहानियों में शिक्षित युवाओं की बेरोजगारी, नौकरी की असुरक्षा और आर्थिक तनाव का चित्रण मिलता है।

1. परिणाम
2. मानसिक तनाव
3. पारिवारिक टूटन

4. नैतिक समझौते
5. सामाजिक अलगाव

4. सांस्कृतिक परिवर्तन :–

परंपरा बनाम आधुनिकता :–

अल्का सरावगी की कहानियाँ भारतीय समाज के संक्रमणकाल को व्यक्त करती हैं।

1. परिवर्तन के संकेत
2. संयुक्त परिवारों का विघटन
3. पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव
4. नई पीढ़ी की बदलती सोच
5. सामाजिक मूल्यों का परिवर्तन

वे यह भी दिखाती हैं कि आधुनिकता हमेशा मानवीय संवेदनाओं को मजबूत नहीं करती।

5. भाषा और शिल्प :–

1. भाषा की विशेषताएँ
2. सरल लेकिन व्यंग्यात्मक शैली
3. बोलचाल की भाषा का प्रयोग
4. मनोवैज्ञानिक गहराई
5. प्रतीकात्मकता

उनकी भाषा सामाजिक यथार्थ को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती है।

6. प्रमुख निष्कर्ष :–

अल्का सरावगी की कहानियाँ भारतीय समाज में बदलते आर्थिक ढाँचे और उसके सामाजिक प्रभावों का गंभीर अध्ययन प्रस्तुत करती हैं। उनकी रचनाएँ यह स्पष्ट करती हैं कि :–

1. आर्थिक विकास के साथ सामाजिक असमानता भी बढ़ी है।
2. बाजारवाद ने मानवीय संबंधों को प्रभावित किया है।
3. स्त्री की स्थिति में परिवर्तन आया है, परंतु पूर्ण स्वतंत्रता अभी भी चुनौती है।
4. आधुनिकता और परंपरा का संघर्ष आज भी जारी है।

उपसंहार :–

अल्का सरावगी का कथा–साहित्य समकालीन भारतीय समाज का सामाजिक–आर्थिक दस्तावेज है। उनकी कहानियाँ केवल मनोरंजन नहीं करतीं, बल्कि पाठक को समाज, अर्थव्यवस्था और मानवीय संबंधों पर गंभीर चिंतन के लिए प्रेरित करती हैं। इसी कारण उनका साहित्य हिंदी कथा–जगत में विशेष महत्व रखता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :– (References / Bibliography)

1. दूसरी कहानी, राजकमल प्रकाशन।
2. कहानियों की तलाश में, राजकमल प्रकाशन।
3. कलि–कथा रू वाया बाइपास, राजकमल प्रकाशन।
4. नामवर सिंह कृ कहानी रू नई कहानी।
5. रामविलास शर्मा कृ हिन्दी साहित्य और समाज।
6. मैनेजर पाण्डेय कृ साहित्य और समाजशास्त्र।
7. International Journal of Reviews and Research in Social Sciences
8. Shodhshauryam Research Journal
9. Google Play Books – Doosari Kahani
10. समकालीन हिन्दी कहानी पर विभिन्न शोध–पत्र एवं आलोचनात्मक लेख।